समीक्षा–व्यवहारवादी समाज की परिभाषा–आधार जीवन, पूर्ति तीनों ज्ञान से–स्वरूप अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था–मानवीय संविधान का धारक वाहकताः जागृतिपूर्ण मानव–मौलिक अधिकारः समानता, संतुलन–मानव संचेतना –दायित्व व कर्तव्य – समाज व विधि – मूल्यांकनः 5 आयाम का मूल्यांकन

अध्याय एक

1. विगत के समुदायों की समीक्षा : धर्म सम्प्रदाय, जाति, समुदाय पर आधारित समाज सभी मिलकर सर्वतोमुखी समाधान सुनिश्चित नहीं हो पाया।
   सर्वशुभ घटित नहीं हो पाया।
   अपेक्षाएं यथावत हैं। अतः अग्रिम शोध/अनुसंधान की आवश्यकता
   धर्म के मूल में ग्रंथ
   अपेक्षा : ग्रंथ के अध्ययन से सर्वतोमुखी समाधान, अखण्ड समाज, सर्वशुभ, असामनता का निराकरण
   – अपेक्षा अभी भी यथावत्
2. वस्तु को इंगित करने के लिए शब्द (उदा.–समाज)
3. वर्तमान स्थिति धनी/निर्धन, बली/दुर्बल, ज्ञानी/अज्ञानी, विद्वान/मूर्ख
   (राज्य, धर्म, परंपरा की देन)
4. धर्म एवं राज्य की परंपरा– आश्वासन, उपदेश, सांत्वना
5. परंपरागत उपलब्धि
   सुख कामना का जनमानस में उदय
   दूरदर्शन, दूरगमन, दूरश्रवण (सुविधा)– सकारात्मक

   शोषण (धरती, मानव), प्रदूषण, मिलावट, कुकर्म, भ्रष्टाचार– नकारात्मक
   वर्तमान की समस्या – घृणा, उपेक्षा, युद्ध, शोषण, अपहरण
6. मानव लक्ष्य – भय मुक्ति
7. सामाजिकता एक एक आयाम – पर्यावरणीय संतुलन–
   धरती, खनिज–वनस्पति, ऋतु, 4 अवस्था का संतुलन
8. वर्तमान परंपरा– भय(भ्रम), प्रलोभन(संग्रह,भोग प्रवृत्ति), आस्था(न जानते हुए को मानना), प्रिय(इंद्रिय), हित(शरीर/स्वास्थ्य), लाभ(कम देकर अधिक लेना), सुविधा, संग्रह, भोग
9. समुदाय के दो आधार –
   आहार, वस्त्र, सत्कार, विवाह, रीति–रिवाज, प्रतीक, नृत्य, ताल, अलंकार, गायन, रचना, लय, साज–सुविधा

   उपासना, आराधना, कर्मकाण्ड, प्रार्थना, अभ्यास

समुदायगत/ परंपरागत/ शिक्षा में विविधता – 1.संस्कार, शिक्षा, संविधान, व्यवस्था

2.संस्कृति, शिक्षा, संविधान, व्यवस्था

3. रोटी, बेटी, राजनीति, अर्थनीति

समानता–असमानता के आधार पर अपना–पराया

सभ्यताः— आगंतुक संबोधन परिचय क्रम, परस्परता में घटित घटना, हाट बाजार, सभा, सम्मेलन में राजधर्म, संबंधों में आशय, मार्गदर्शन, निर्देशन का अनुसरण

धार्मिक राज्य— आस्था विधि; स्वर्ग—नरक, पाप—पुण्य

आर्थिक राज्य— भय, प्रलोभन विधि; प्रतीक मुद्रा का प्रचलन; संग्रह सरल; लाभ की मानसिकता

दोनों के मूल में संविधान के सहयोग से शक्ति केंद्रित शासन

धर्म व राज्य संविधान का मूल—शक्ति केन्द्रित शासन

राज्य, धर्म परंपरा की देन—

आस्थावादी प्रलोभन— उपदेश, भजन, कीर्तन से पूरा

वस्तुवादी प्रलोभन— प्रौद्योगिकी से पूरा— उपभोक्तावादी, संचारवादी, सामरिक तंत्रवादी— ईंधन एवं वातावरण का शोषण

अंतर्विरोध, बाह्य विरोध — संतुलन (अभय समाधान विधि से सह—अस्तित्व क्रम में संतुलन) का आधार मानव व मानवीयता, मानव—मानव संबंध, मानव—नैसर्गिक संबंध

समुदाय चित्रण का आधार — रंग, नस्ल, जाति, मत, पंथ, परंपरा, धर्म, भाषा, देश, धन, पद

नस्ल के आधार पर भय, पाशविक भय, धार्मिक संप्रदाय में तौर तरीके व प्रतीकों की भिन्नता के आधार पर भय

समाज सहज अर्थ सार्थक होने हेतु समाज व सामाजिकता का अध्ययन

आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक संतुलन

समाज—वैभव : पूर्णता के अर्थ में समस्त मानव उन्मुख/प्रमाणित होने से है।

अध्यात्मवाद—संतुलन स्थली = मोक्ष

शिक्षा एवं व्यवस्था अध्ययनगम्य विधि से प्रस्तुत नहीं हो पाया

समीक्षा का आशय — अपने संस्कार को ठीक करना एवं समाज भागीदारी में सहयोग

विज्ञान की मान्यता — प्रकृति पर विजय, भय—मुक्ति

अनुप्राणनः— मान्यता, मानसिकता, प्रवृत्ति, प्राथमिकता को अग्रिम पीढ़ी में स्थापित करने के लिए किया गया क्रिया, प्रक्रिया, संप्रेषणा

अध्याय दो

व्यवहारवादी समाज :–

संबंध में मूल्य–मूल्यांकन पूर्वक उभय तृप्ति

परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन में भागीदारी

मूल्य, चरित्र, नैतिकतापूर्ण आचरण पूर्वक जीना

व्यवस्था सहज प्रमाण एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी व सम्मति

व्यवहारवादी शास्त्र :– शिक्षा–संस्कार पूर्वक ग्रहण योग्य सभी उपक्रम एवं कार्यप्रणाली

वर्तमान में विश्वास का आधार – सर्वतोमुखी समाधान एवं उसकी निरंतरता

परंपरा के 4 आयाम :– शिक्षा, संस्कार, विधि, व्यवस्था

संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था

चारों आयाम में मानवीयता का समावेश होना ही मानवीयतापूर्ण परंपरा का तात्पर्य

मानवीय परंपरा का संतुलन– अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में,

संतुलन का आधार– सर्वतोमुखी समाधान (अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन)

धारक–वाहक= मानव; आवश्यकता सर्वमानव में स्वीकृत

नैसर्गिक रुप में जागृति नित्य समीचीन

परिवार में संतुलन

मानव= मनाकार को साकार करने वाला; मनः स्वस्थता का आशावादी

समाज, व्यवस्था का उद्देश्य :– पूर्णता की ओर निर्देश

आवेश विवशता के रूप में, एवं अव्यवस्था का द्योतक; मुक्ति की आवश्यकता हर मानव में

विवशता का मूल रूप ही बंधन – आशा, विचार, इच्छा बंधन

बंधन से आवेश; आवेश से विवशता

आवेश= काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य

अजागृतिवश भ्रम के रुप में बंधन

जागृतिपूर्णता पूर्वक भ्रम से मुक्ति एक सहज क्रिया

सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था के रूप में प्रामाणिक होना

जागृतिपूर्वक ही अभिव्यक्ति एवं संप्रेषणा संभव जो जागृतिगामी कार्यक्रम हेतु आवश्यक

संबंध व व्यवस्थापूर्वक जीने का आधार ज्ञान है।

जागृति जीवन में घटित होता है। स्मृति, समझदारी व देखना जीवन में

पदार्थ अवस्था – प्राण – जीव – ज्ञान

परंपरा संपन्नता + रासायनिम उर्मि/तरंग – भिन्न रचना विधि

मानव शरीर रचना – विकासक्रम में; डिम्ब एवं शुक्र सूत्र का संयोग; पुष्टि एवं पुष्टि के लिए प्राप्त द्रव्यों की पवित्रता, शुद्धता, संयोग विधि के आधार पर शरीर पर विविध प्रभाव

रासायनिक द्रव्यों, प्राणकोषाओं और रचना सूत्र सम्पन्नता के आधार पर संपूर्ण रासायनिक रचना एवं विरचना (प्राण अवस्था, जीव शरीर, मानव शरीर)

मानव शरीर वंशानुषंगी

मानव वंशानुषंगी न होकर शिक्षा–संस्कार अनुषंगी है।

अखण्ड समाज की कल्पना/आवश्यकता मानव सहज है।

वर्तमान परंपरा – भय, प्रलोभन, आस्था

सुविधा, संग्रह, भोग

प्रिय, हित, लाभ

आशा, विचार, इच्छा

चाहना – न्याय, समाधान, सत्य द्रष्टा, व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी

पूर्ण जागृति, समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

स्वायत्तता, अभय, स्वराज्य, स्वतंत्रता

अभी तक सहज इच्छाएँ प्रमाणित नहीं हुई हैं – समाज के संदर्भ में

चाहना चरितार्थ होने हेतु व्यवहारवादी समाजशास्त्र

प्रमाण का स्वरुप= सर्वशुभ/मानव लक्ष्य की सुलभता

प्रमाण का आधार– तीनों ज्ञान; परम त्रय की स्थिति; जीवन मूल्य व मानव मूल्य प्रमाणित

सह–अस्तित्व में ही मात्रा, व्यवस्था (निश्चित आचरण) रचना स्पष्ट होती है।

मानव लक्ष्य प्रमाणित होने से जीवन मूल्य की प्राप्ति

समाधान+न्याय =सुख

समाधान+समृद्धि =शांति

समाधान+अभय =संतोष

समाधान+सह–अस्तित्व =आनंद

व्यवहार में अप्रमाणित इच्छा, विचार, आशा के 9 बिन्दु

अप्रमाणित इच्छाओं से आशित तथ्य चरितार्थ होने के लिए व्यवहारवादी समाजशास्त्र

अध्याय 3

शब्द – अर्थ – वस्तुः अध्ययन; उपलब्धि = ज्ञान

अध्ययनपूर्वक समझा हुआ को अनुभवपूर्वक प्रमाणित करना = ईमानदारी

अस्तित्व=सह–अस्तित्व= सत्ता में संपृक्त प्रकृति, सत्ता पारगामी फलस्वरूप प्रकृति में ऊर्जा सम्पन्नता, प्रमाणः

ऊर्जा सम्पन्नता का प्रमाणः इकाई में श्रम, गति, परिणाम – गठनपूर्णता = जीवन परमाणु – क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता

अस्तित्व = सह–अस्तित्व पूर्वक 4 अवस्थाओं के रूप में,

आधार– परमाणुः गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता

समझने–समझाने वाला मानव, क्रियाकलापों का नामकरण करने वाला मानव

जीवावस्था – वंशानुषंगीयता , जीवनी क्रम, संपूर्ण मेधस युक्त शरीर

ज्ञानावस्था – कल्पनाशीलता सहज विधि से प्रकाशित, जागृतिक्रम (संवेदनशीलता / शरीर संवेदना पूरा करने के अर्थ में जीना, संज्ञानशीलता / अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का प्रमाणित होना शेष)

न्याय=आचरण में संबंध और व्यवस्थापूर्वक जीना

मानव–मानव संबंध – परिवार, समाज–व्यवस्था के रूप में न्याय, धर्म, सत्य सहज प्रमाण

मानव–शेष प्रकृति संबंध – नियम, नियंत्रण, संतुलन के रूप में – प्रयोजन–संतुलन

आधार तीनों ज्ञान

प्रमाण – अनुभव, व्यवहार, प्रयोग

मानवेतर प्रकृति = 3 अवस्था=धरती, जल, वायु, वन, खनिज

(मानव चेतना विधि से जीने में विश्वास हो पाना = स्वयं में विश्वास)

परंपरागत प्रमाण (शब्द / आप्त वाक्य, प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम–नियम)

विज्ञान प्रमाण – यंत्र प्रमाण;

उपलब्धि– दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन, दूरसंचार से मौसम का पूर्वानुमान, प्रौद्योगिकी में सफलता

सुविधा–संग्रहः अतृप्ति

प्रदूषण एवं मानव संबंध समस्या

प्रदूषण का कारण – ईंधन संयोजन विधि में दूरदर्शिता का अभाव

अध्याय 4

व्यवहारवादी समाज का स्वरुप

सर्वशुभ का स्वरूप = समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

धारक–वाहक : मानव जाति

जीवन ज्ञान और अस्तित्व दर्शन ज्ञान पूर्वक समाधानः हर दिशा, कोण, परिप्रेक्ष्य, आयामों के लिए आवश्यक

जीवन ज्ञान और अस्तित्व दर्शन ज्ञान का धारक–वाहकः जीवन

अस्तित्व नित्य वर्तमान, जीवन अविभाज्य, अनेक भौतिक रासायनिक रचनाएँ, उनमें एक मानव शरीर

समझने वाला जीवन, न कि शरीर

जागृति = 10 क्रियाओं की पूर्णतया क्रियाशील होना, द्रष्टापद में होना

मूल भ्रम :– शरीर को जीवन समझना

मानव में व्यक्त होने वाली संपूर्ण गतियाँ :–इच्छा,विचार, आशा सहित किये जाने वाले कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित क्रियाकलाप

प्रभाव क्षेत्र :– सीमा से अधिक वैभव= महिमा= व्यवस्था सहज वैभव में भागीदारी

जागृत जीवन प्रवाहः–आशा, विचार, इच्छा, संकल्प, प्रमाण

जीवावस्था में :– आशा, आंशिक विचार

भ्रमित मानव मेंः–आशा, विचार, इच्छा की ज्ञानेन्द्रिय एवं कर्मेन्द्रिय के द्वारा अभिव्यक्ति

जीवनः–अमर पद, सह–अस्तित्व=नित्य पद

रचना–विरचना : परिणाम में परिवर्तन, होने की निरंतरता

रचना–विरचना किसी धरती पर ही संभव, धरती अपने वैभव को बनाए रखने में सक्षम

जीवन पद में संक्रमणः अस्तित्व सहज व्यवस्थानुसार, मानव शरीर रचना विधि पर्यंत मानव का कोई हस्तक्षेप नहीं

जागृति के अभाव में :– मानव में असंतुलन :– उन्मादत्रय

धरती में असंतुलन

सर्वशुभ रूपी कार्यक्रमों, विचारों, प्रवृत्तियों, निष्कर्षों को मानव के सम्मुख प्रस्तुत करना व्यवहारिक समाजशास्त्र का उद्देश्य

उपभोक्तावाद :– उपायपूर्वक भोग विधियों को पहचान लेना, सदा–सदा असामाजिक

भोग–वाद, संग्रह–सुविधा केंन्द्रित, इन्द्रिय लिप्सा आधारित

आकर्षक प्रचार एवं पैकिंग

शयनागार, प्रसाधनागार व भोजनागार केन्द्रित

विकल्प :–

1. ज्ञान, दर्शन, विवेक, विज्ञान विधि विचारों में विकल्प
2. विचार, व्यवहार, उत्पादन, आचरण विधि में विकल्प
3. चेतना विकास मूल्य शिक्षा–संस्कार, तकनीकी शिक्षण कार्य में विकल्प

शिक्षा–संस्कार के बिन्दु

1. समझदारी से समाधान, श्रम से समृद्धि
2. श्रममूल्य का मूल्यांकनपूर्वक लाभ–हानि मुक्त विधि से विनिमय
3. आवश्यकता से अधिक उत्पादन का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनीयता
4. व्यवहार में मूल्यमूलक मानसिकता
5. विचार में सह–अस्तित्ववाद=वादत्रय, अनुभवमूलक विचार
6. ज्ञान, दर्शन, विज्ञानः–क्यों, कैसा, क्या का उत्तर
7. मानव सहज आचरण : न्याय विधि से
8. स्वास्थ्य–संयम :– जीवन सहज जागृति को मानव परंपरा में प्रमाणित करना ही स्वस्थ शरीर का मूल्यांकन
9. मानवीकृत शिक्षा, मानव के संपूर्ण आयाम, दिशा, परिप्रेक्ष्य, कोण का अध्ययन

जीवन जागृति पूर्वक ही तृप्त

जागृति का मूल कार्यक्रम = शिक्षा–संस्कार,

शिक्षा–संस्कार का उद्देश्य :–स्वायत्त मानव के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी समृद्ध करने में सक्षम रहना

जागृत मानव व्यवस्था का पोषक, संरक्षक, धारक–वाहक, भ्रमवश विखण्डन विधि

अध्ययन से आचरण तक :– समाजशास्त्र का Scope

स्वायत्त मानव :

1. स्वयं में विश्वास
2. श्रेष्ठता का सम्मान–परस्परता में मूल्यांकन
3. प्रतिभा में संतुलन
4. प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन –

   प्रतिभा– संपूर्ण आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्य, देश, काल में प्रामाणिकता और उसकी निरंतरता

   समाधान और उसकी निरंतरता के रूप में अभिव्यक्ति, संप्रेषित, प्रकाशित करने में विश्वास

   व्यक्तित्व– आहार, विहार, व्यवहार ,कार्य
5. व्यवहार में सामाजिक– मानवीय आचरण (मूल्य, चरित्र, नैतिकता पूर्वक जीना)
6. व्यवसाय में स्वावलंबी –

   समाजिकता एवं स्वावलंबन– एक अनिवार्यतम अधिकार एवं अभिव्यक्ति

   1 से 6– व्यवस्था के रूप में जीना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना

   प्रमाण परंपरा का आधार मानव, न कि वांगमय

   शिक्षा–संस्कार परंपरा न होने की स्थिति में अनुसंधान

   मूल्यों का प्रमाण संबंध को पहचानने के उपरांत

   संबंध – मानव, नैसर्गिक, ब्रह्माण्डीय

   नैसर्गिक– धरती, जल, वायु, ऋतु संतुलन, ऊष्मा वितरण–विनियोजन कार्यक्रम

   ब्रह्माण्डीय– किरण व तरंगों की पूरकता

   सुविधा की आवश्यकता

   सामान्य आकांक्षा– आहार, आवास, अलंकारः– पोषण, संरक्षण के अर्थ में– समृद्धि का प्रकाशन

   महत्व आकांक्षा– दूरगमन,दूरश्रवण,दूरदर्शन– ज्ञानेन्द्रिय व कर्मेन्द्रियों के गतिसीमा से अधिक गति के लिए, दूरसंचार समाज गति में पूरक

आवश्यकता विधि से इनका उपयोग

परिवार मानव :– संबंध की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकनपूर्वक उभय तृप्ति

परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन और श्रम मूल्य का मूल्यांकन

परिवार व्यवस्था से विश्व परिवार व्यवस्था तक व्यवस्था के 5 आयाम में भागीदारी

मानव–मानव संबंध – 7, मूल्य–30 (जीवन, मानव, स्थापित, शिष्ट, वस्तु)

वस्तु का त्रिआयाम – यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता

हर वस्तु में :– रूप, गुण, स्वभाव, धर्म; प्रकृति 4 अवस्थाओं के रूप में द्रष्टव्य

सर्वेक्षण हेतु परीक्षण, निरीक्षण क्षमता का जागृत रहना आवश्यक

मानव समझकर करने वाला (संस्कार अनुषंगी) इकाई

कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता विधि से कर्म

हर बच्चे में न्याय की अपेक्षा, सही कार्य–व्यवहार करने की इच्छा, सत्यवक्ता

शिक्षा, संस्कार, संविधान, व्यवस्था से परम न्याय, परम समाधान, परम सत्य बोध करने, कराने, करने के लिए मत देने में हर व्यक्ति सक्षम होना

1. मानव सहज जाति एक :– ज्ञानावस्था की प्रतिष्ठा;
   हर मानव जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने योग्य इकाई;
   सर्वतोमुखी समाधान, सार्वभौम व्यवस्था, जागृति एवं उसकी निरंतरता;
   प्रामाणिकता एवं उसकी निरंतरता;
   मानवीय आचरण – अखण्ड समाज
2. सर्वमानव में मानवत्व समाज :–
   मानवत्व= व्यवस्था सूत्र= स्वायत्तता, प्रमाण में मानवीयतापूर्ण आचरण
   मानवीयतापूर्ण आचरण=मूल, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य रूप
   मानवत्व– जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान एवं मानवीयतापूर्ण आचरण का संयुक्त रूप

अस्तित्व में प्रत्येक एक त्व सहित व्यवस्था

संज्ञानशीलता एवं संवेदनशीलता का तृप्ति बिंदु मानवीयतापूर्ण आचरण के रूप में प्रमाणित

जीवन मूलक विधि से मानवत्व समझ में आता है।

हर जीवन में गठनपूर्णता, अक्षय बल, शक्ति, जीवन जागृति का लक्ष्य

3. सर्वमानव में शुभाकांक्षा समान – हर मानव में शुभ की चाहना, पर चाहने एवं होने के बीच दूरी

शुभ = सार्वभौम व्यवस्था, समाधान, समृद्धि,अभय, सह–अस्तित्व

सार्वभौम व्यवस्था का आधारः आचरण, शिक्षा, संविधान

4. सर्वमानव में मानव धर्म समान–

5. मानव धर्म=सर्वतोमुखी समाधान और उसकी निरंतरता

प्रामाणिकता ही व्यवहार में सर्वतोमुखी समाधान के रूप में प्रमाणित होता है।

समाधान ही मानव सहज उद्देश्य एवं प्रमाण; जागृतिपूर्वक इसकी पूर्ति

मानवीयतापूर्ण आचरण, मानव धर्म से मानवीय परंपरा की निरंतरता संभव

समाधान= स्वयं व्यवस्था में जीना + समग्र व्यवस्था में भागीदारी= 5 आयाम में सामरस्यता

स्वयं व्यवस्था में जीना= सुख, शांति, संतोष, आनंद= जीवन लक्ष्य

समग्र व्यवस्था= समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व= मानव लक्ष्य

समाधान परंपरा में संस्कार(पूर्णता के अर्थ में की गई कृति/स्वीकृति) के रूप में प्रवाहित होती है।

मानवत्व के प्रति जागृत होने से सर्वतोमुखी समाधान सुलभ होता है।

6. धरती अखण्ड, भाषा कारण,गुण,गणित के अर्थ में समान–

धरती 4 अवस्थाओं से संपन्न,

जागृति, अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था पूर्वक ही धरती स्वस्थ

समझदारी एवं उसकी परंपरा हेतु भाषा

वस्तु/अर्थ को इंगित करने हेतु शब्द

7. संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था सर्वमानव के लिए समान –

संस्कृति का मूल रूप संस्कार

संस्कार का मूल रूप ज्ञानत्रय,

संस्कृति ही सभ्यता का आधार

परिवार सभा से विश्व परिवार सभा सहज भागीदारी का निर्वाह करना

सभ्यता में शिष्टता एवं प्रमाण समाया हुआ

सभी स्तरीय परिवार और सभा सहज आचरण = मानवीयता पूर्ण आचरण, व्यवस्था में भागीदारी। यही संविधान सूत्र है।

जागृति व सह–अस्तित्व के योगफल में सर्वशुभ सर्वसुलभ

8. सर्वमानव में लक्ष्य समान–

मानव सहज लक्ष्य = जागृति एवं उसका प्रमाण परंपरा में

मानव संस्कार अनुषंगी इकाई

पूर्णता के अर्थ में बोधपूर्वक स्वीकारने योग्य संपूर्ण अध्ययन; एवं उसे अनुभवमूलक विधि से व्यवहार में प्रमाणित करने का संपूर्ण क्रियाकलाप ही संस्कार एवं प्रमाण का तात्पर्य

ज्ञानत्रय सहित परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था विधि से सफल व सार्थक

सफल = स्वयंफूर्त विधि से व्यवस्था के रूप में प्रमाणित

सार्थक=समग्र व्यवस्था में भागीदारी का निर्वाह

संविधान = सर्वमानव सहज सार्वभौम स्वतंत्रता,स्वराज्य,व्यवस्था सहज आचरण को अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन सहित प्रत्येक मानव मूल्य व मूल्यांकनपूर्वक संपूर्ण आयाम, कोण, परिप्रेक्ष्य व दिशा में सभी देश, काल में सुरक्षित नियंत्रित, संतुष्ट, समृद्ध, समाधानित होने, रहने, करने, कराने, करने के लिए मत देने हेतु न्याय संहिता

मूल्यांकन – 1. परस्परता (संबंध में) 2. कर्तव्य–दायित्व निर्वाह में

संविधान का लक्ष्य 1. परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था स्वानुशासन रूपी स्वतंत्रता

2. जीवन लक्ष्य, मानव लक्ष्य और उसकी निरंतरता

अध्याय 5

मानवीय संविधान का धारक–वाहक :–जागृत मानव

शिक्षा–संस्कार पूर्वक स्वतंत्रता व स्वराज्य का धारक, वाहक, प्रेरक

मानवत्व= स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार (हर नर–नारी में समान)

जागृति सहज गति समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

स्वत्व= जागृति= ज्ञानत्रय,

स्वतंत्रता= अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी हेतु स्वतंत्र(करना,कराना,अनुमोदन)

अधिकार= मानवीयता पूर्ण आचरण करना, कराना, अनुमोदन = मूल्य चरित्र नैतिकता का अविभाज्य स्वरूप

सार्वभौम व्यवस्था = 5 आयाम, 10 सोपान, प्रत्येक सोपान एक दूसरे के पूरक, अविभाज्य(अनुप्राणन सूत्र से जुड़े)

मानव में समानता :– जीवन के आधार पर – जागृति की आवश्यकता, संभावना, सार्थकता, अर्हता, अपेक्षा–नित्य शुभ

–जागृतिपूर्वक स्वयं में व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी

संतुलन :– व्यवस्था के 5 आयाम में सामरस्यता

आचरण में सामरस्यता

4 आयाम में सामरस्यता

परंपरा के 4 स्तंभ में सामरस्यता

नैसर्गिक संबंध एवं जीने की कला में सामरस्यता

परिवार से विश्व परिवार तक परस्पर उपयोगिता, पूरकता एवं सामरस्यता

अभ्युदय हेतु मानवीयता पूर्ण संविधान अध्ययन व आचरण की वस्तु

मौलिक अधिकार

जागृति सहज स्थिति = निरंतर सुख = सुख, शांति, संतोष, आनंद

जागृति सहज गति = मानव लक्ष्य = समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

स्थिति एवं गति की अविभाज्यता

1. मानव जागृति पूर्वक : सामाजिक, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का निर्वाह, समस्त भ्रम से मुक्ति, भ्रम ही बंधन का कारण की समझ, जनसंख्या नियंत्रण
2. संबंध – मूल्य – मूल्यांकन और उभय तृप्ति में सामरस्यता

मानव और नैसर्गिकता में पूरकता = नियति सहज संतुलन= वर्तमान में विश्वास = सह–अस्तित्व, अभय, समृद्धि, समाधान = सर्वमानव की सार्वकालिक वांछा

मानव = जीवन एवं शरीर का संयुक्त रूप

= अस्तित्व में अविभाज्य

= तृप्तियाँ जीवन से संबंधित

= मानव तृप्ति वर्तमान में विश्वास के आधार पर (मानव लक्ष्य साक्षित)

= प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता और अपेक्षा

= धरती स्वस्थ रहने एवं परंपरा जागृत रहने की स्थिति में सफल

जीवन ज्ञान एवं अस्तित्व दर्शन सम्मत विधि से मानवीय आचरण रुपी संविधान की स्पष्टती

सर्वमानव में शुभ की चाहना

चाहना एवं होने के मध्य में मानवीयतापूर्ण विधि से आचरण करना (संविधान) ही एकमात्र विधि

आचरण ही सभी अवस्थाओं में मौलिकता का प्रमाण

सह–अस्तित्व में ही आचरण व जागृति प्रमाणित

अनुभव – विचार – व्यवहार–कार्य ही मौलिक अधिकार सहज प्रतिष्ठा

अध्याय 6

मौलिक अधिकार / विधान

1. मानवीयता सहज जागृति व जागृतिपूर्ण अखण्ड समाज – सार्वभौम व्यवस्थापूर्वक परंपरा के रूप में निरंतरता को प्रमाणित करना, कराना एवं करने के लिए मत देना परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था में ही संपूर्ण प्रमाण प्रमाणित
2. मनाकार को साकार करनेवाला, मनःस्वस्थता का आशावादी
   मनाकार को साकार करनेवाला– सामान्य आकांक्षा व महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुओं और उपकरणों के रूप में तन, मन सहित श्रम नियोजन पूर्वक साकार करने वाला
   मनःस्वस्थता का आशावादी – जागृति व जागृतिपूर्णता का द्योतक
3. समाधान , समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व में प्रमाण का स्रोत व प्रमाण परंपरा :–
   स्थिति में क्रिया एवं गति में व्याख्या
   त्व सहित व्यवस्था (स्थिति) और समग्र व्यवस्था में भागीदारी (गति)
   विचार व अनुभव समुच्चय विधि से स्थिति, व्यवहार तथा प्रयोग विधि से गति
   मानवीयतापूर्ण क्रिया=स्थिति;परंपरा के चारों आयाम में मानवीयता का समावेश=गति
   मूल्यों के रूप में स्थिति; संबंध और व्यवहार के रूप में गति
   समाधान के रूप में स्थिति; व्यवस्था के रूप में गति
   मूल्यों के धारकता के रूप में स्थिति; वाहकता सहित मूल्यांकन के रूप में गति
   जागृत दृष्टि के रूप में स्थिति; दर्शन के रूप में गति
   समझदारी (जानना, मानना, पहचानना) के रूप में स्थिति; निर्वाह करने के रूप में गति
   मानव के रूप में स्थिति; मानव–जाति के रूप में गति
   मानव के रूप में स्थिति; मानव धर्म (व्यवस्था) के रूप में गति
4. मानवीयतापूर्ण आचरण – मूल्य, चरित्र, नैतिकतापूर्वक जीना
   प्रत्येक एक अपने आचरण सहित ही त्व को प्रमाणित करता है।
   मानव जागृति पूर्वक ही त्व सहित व्यवस्था को प्रमाणित करता है।
   निर्वाह करने के क्रम में आचरण, व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित होती है।
   मूल्य प्रधान विधि से परिवार व्यवस्था प्रमाणित होती है।
   चरित्र प्रधान विधि से अखण्ड समाज प्रमाणित होता है।
   नैतिकता प्रधान विधि से समग्र व्यवस्था प्रमाणित होती है।
   ज्ञानत्रय की स्वीकृति = स्वत्व
   स्वानुशासन = स्वतंत्रता
   समग्र व्यवस्था में भागीदारी = स्वराज्य
5. मानवीयतापूर्ण आचरण सहजता ही मानव में स्वभाव गति है
   मूल्य : 30 मूल्य संबंध की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति

चरित्र : स्वधन(प्रतिफल, पारितोष और पुरस्कार से प्राप्त धन), स्वनारी/स्वपुरूष(विधिवत् विवाहपूर्वक प्राप्त नारी/पुरूष), दयापूर्ण व्यवहार–कार्य

नैतिकता : तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा

विवाहः परिवार व्यवस्था में जीने और समग्र व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करने की प्रतिज्ञा; लेन–देन की आवश्यकता नहीं, पारितोष रूप में वस्तुओं का आदान–प्रदान स्वयंस्फूर्त विधि से

अर्हता : स्वायत्त मानव, 22 वर्ष, अधिकतम 3 वर्ष का अंतर; किसी एक की मृत्यु होने पर पुनर्विवाह (अधिकतम 3 वर्षों के अंतराल का साथी)

मानवत्व से प्रमाण सिद्धि, व्यवस्था एवं व्यवस्था में भागीदारी में दक्षता, ज्ञानत्रय में पारंगत;

स्वयंस्फूर्त सम्मत योजना, सम्मत स्वीकृति और प्रवृत्ति, व्यवस्था प्रधान सार्थकता और उसकी अखण्डता सहज वैभव सुख में निरंतरता को स्वीकारा हुआ निष्ठान्वित मानसिकता में दाम्पत्य संबंध की अनिवार्यता स्वाभाविक रूप से गौण

मानवीयतापूर्ण मानसिकता, विचार, चिंतन (मानवीयता के प्रति दायित्व–कर्तव्य मानसिकता की सुदृढ़ता) समुन्नत और परिष्कृत होते–होते यौन–यौवन संबंधी आकर्षण/सम्मोहन क्षय होता है।

स्वधनः– श्रम नियोजन व सेवा के प्रतिफल के रूप में प्राप्त वस्तु

सेवाः– बिगड़े हुए वस्तु, यंत्र, मानव–शरीर, जीव शरीर को सुधारना

श्रम– सामान्य आकांक्षा (आहार, आवास,अलंकार) व महत्वाकांक्षा (दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन) संबंधी वस्तुओं को पाने की विधि से कुशलता, निपुणतापूर्ण मानसिकता, विचार सहित किया गया हस्तलाघव क्रियाकलाप

शरीर पोषण, संरक्षण एवं समाज गति के अर्थ में उत्पादन का प्रयोजन

जीवावस्था और स्वेदज संसार – मांसाहार या तुल्य– हिंसा – बल और क्रूरतापूर्वक जीवन का स्वरूप रूपी शरीर का भक्षण करना

मानव शरीर रचना (आँत, दाँत, नाखून, पानी पीने के तरीके) शाकाहारी पद्धति के योग्य

आहार प्रणाली, पद्धति को अपनाने का आधार मानवीयतापूर्ण मानव परंपरा

पारितोषः–प्रसन्नतापूर्वक प्रसन्नता के लिए प्रदत्त वस्तुएँ। उत्सवों के अवसर पर आदान–प्रदान

पुरस्कार :– श्रेष्ठता का सम्मान क्रम में पुरस्कृत करना

स्वायत्त मानव , परिवार मानव, व्यवस्था मानव, व्यवस्था के 5 आयामों में श्रेष्ठता– सभा के किसी स्तर पर

दयापूर्ण कार्य :– उत्पादित वस्तु का संरक्षण

दयापूर्ण व्यवहार क्रम में – तन, मन धन रूपी अर्थ का सदुपयोगः पोषण, संरक्षण, समाज गति के रूप में

जीने देकर जीना

नैतिकता :– धर्म एवं राज्य नैतिकता

रूप, बल, धन, पद, बद्धि का सदुपयोग – सुरक्षा

धर्म का मूल रूप सर्वतोमुखी समाधान

राज्य का मूल रूप समाधान सहित समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

रूप के साथ सच्चरित्रता :– शरीर का सदुपयोग विधि

बल के साथ दया :– जीने देकर जीना

धन के साथ उदारता –तन, मन, धन का पोषण, संरक्षण, समाज गति व्यवस्था सहज स्वीकृति और समग्र व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करने के क्रियाकलापों में अर्थ संपूर्ण तथा सार्थक होना, सदुपयोग होना

पद के साथ न्याय – संबंध मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति

बुद्धि के साथ विवेक – अनुभव, बोधपूर्ण विधि से ही बुद्धि का सदुपयोग

विवेकः– न्याय–अन्याय, धर्म–अधर्म, सत्य–असत्य की विवेचना का स्वरूप

विवेचना कार्य ही विवेक

अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था रूपी प्रयोजन क्रम में भागीदारी को निर्वाह करना ही विवेकपूर्ण विचार–कार्य–व्यवहार

संबंध–मूल्य–मूल्यांकन :–

संबंध– पूर्णता(निरंतरता/अक्षुण्णता) के अर्थ में अनुबन्ध

परिवार में समाधान, समृद्धि प्रमाणित एवं अभय, सह–अस्तित्व का सूत्र समाया

परिवार क्रम विधि से समाज रचना, सभा क्रम में व्यवस्था गति

वस्तु= रूप, गुण, स्वभाव, धर्म;

रूप + सम–विषम गुण की गणना=गणित

स्वेदज संसार रचनाओं में हर प्राण कोषा ही निष्प्राण कोषा के रूप में बीज रूप में रह जाते हैं।

पदार्थ – प्राण – जीव शरीर – मानव शरीर

स्वेदज संसारः– प्राण एवं जीव अवस्था के बीच की कडी

जीव शरीर को संचालित करता जीवन का लक्ष्य इंद्रिय सन्निकर्ष

मानव शरीर को संचालित करता मानव का लक्ष्य समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

सुनिश्चित करने हेतु कल्पनाशीलता व कर्मस्वतंत्रता

हर बच्चे में न्याय की अपेक्षा, सही कार्य व्यवहार करने की इच्छा, सत्यवक्ता– भरपाई हेतु मानवीयतापूर्ण शिक्षा प्रणाली, पद्धति, नीति पूर्वक किया गया अध्ययन–अध्यापन

जीवन ज्ञान से न्याय प्रदायी क्षमता,

सही कार्य –व्यवहार करने की अर्हता, अस्तित्व दर्शन की महिमा वश

सत्यबोध सहित सत्यवक्ता का तृप्ति

जागृत परंपरा = शिक्षा–संस्कार परंपरा का मानवीयकरण + परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था का सर्वसुलभता

समझ के करो की विधि + जीने दो जियो; समझने का मूल स्रोत – परिवार

जागृत परंपरा में जनसंख्या नियंत्रण स्वाभाविक

संपूर्ण आवश्यकताएँ प्रयोजन की कसौटी पर परीक्षित प्रमाणित होना ही जागृति का साक्ष्य

संबंधों के साथ शिष्टता स्वाभाविक

मानव संबंधों का संबोधन विधि से ही शिष्टता का निश्चयन

संबोधन– परिवार क्रम में, सभा क्रम में, समीतियों में

देश, काल, क्रियाएं एक दूसरे से गुँथे हुएं, सधे हुए विधि से प्रवाहित

देश, काल, क्रियाएं सह–अस्तित्व सहज विन्यास

मानव संदेश और निर्देशपूर्वक ही प्रमाणित होने की विधि

गठनपूर्णता के अनन्तर जीवन और उसकी निरंतरता

क्रिया पूर्णता के अनन्तर समाज और उसकी निरंतरता

आचरण पूर्णता के अनन्तर प्रामाणिकता और उसकी निरंतरता

प्रमाण स्वतृप्ति एवं तृप्तिपूर्ण परंपरा के आशय में घटित

प्रबोधन किसी को बोध के लिए अर्पित

संबंध – मानव, नैसर्गिक, व्यवस्था

मानव अपनी परंपरा बनाने में प्रवृत्तिशील है।

व्यवस्था स्वयं में न्याय, उत्पादन और विनिमय सुलभता

निरंतरता हेतु स्वास्थ्य संयम और मानवीय शिक्षा–संस्कार

संबंध के प्रकार – 7 + व्यवस्था संबंध

अखण्ड समाज का प्रयोजन – व्यवस्था एवं व्यवस्था में भागीदारी

मानवीयतापूर्ण पद्धति :– न्याय, उत्पादन, विनिमय, स्वास्थ्य–संयम और शिक्षा–संस्कार में पूरकता

प्रणाली :– परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था प्रणाली

नीति :– तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा

जागृति में सभी भ्रम विलय; भ्रम का प्रभाव निःशेष

अध्ययनपूर्वक अस्तित्व बोध, जीवन बोध और संबंध बोध होना। अनन्तर अनुभवगम्य अनुभव एवं अभिव्यक्ति ही संपूर्णता है।

1. माता–पिता और पुत्र–पुत्रीः– वंशानुगत विधि से शरीर रचना के आधार पर
   पुत्र–पुत्रीः– कौमार्य अवस्था में संबोधन की अपेक्षा, यौवन काल में जीवन जागृति सहज संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था के अनुरूप देखने की अपेक्षा
   माता–पिताः– पोषण–संरक्षण के आधार पर
   शिक्षा जब संस्कार के रूप में प्रतिष्ठित होता है, उसी मुहूर्त से जीवन जागृत होना स्वाभाविक है।
   हर जागृत स्वायत्त परिवार मानव ही अभिभावक;
   ऐसे अभिभावक में उदारता+दयापूर्ण कार्य–व्यवहार;
   प्रौढ़ संतान का कार्य–व्यवहार कृतज्ञता सहित, उदारतापूर्वक
   व्यवस्था सहज विधि से नियमपूर्ण कार्य और समाज विधि से न्यायपूर्ण व्यवहार
   नियमपूर्ण कार्य नैसर्गिकता से साथ संयोजित
   न्यायपूर्ण व्यवहार परस्पर मानव में सार्थक
2. भाई–बहन :–परस्पर परीक्षण, जागृतिगामी दिशा, व्यवहार, कार्य–प्रणाली
   हर बच्चे में लुप्त–सुप्त–प्रकट प्रश्नः–मैं अपने में क्या हूँ? कैसा हूँ? क्या चाहता हूँ?
   शिशु–कौमार्य अवस्था से ही पूरकता को पहचानने का क्रम
   संबोधन का उच्चारण, उच्चारण के अनन्तर रूप
   कार्य–व्यवहार–आचरण के आधार पर गुण, स्वभाव को पहचानना
   धर्म–बोध अध्ययन विधि से संपन्न
   सदा–सदा मूल्यांकन प्रणाली में गतित, उभय जागृति हेतु सर्वोत्तम
3. मित्र संबंध :–उभय जागृति, कर्तव्य–दायित्व का प्रयोजन एवं मूल्यांकन हेतु जाँच–पड़ताल + सहायक होना
4. गुरू–शिष्य :–
   गुरू :–समझा हुआ, सीखा हुआ, जीया हुआ, हर आचार्य स्वायत्त
   शिष्य :– समझने, सीखने, करके जीने का इच्छा, प्रवृत्ति, जिज्ञासा का प्रस्तुति
   शिक्षण संस्था का स्वरूप अभिभावकों से नियंत्रित रहना

शिक्षण संस्था का प्रयोजन कार्यकलाप जागृतिपूर्ण आचार्यों से नियंत्रित रहना

अध्यापन हेतु धन–वस्तु को विद्यार्थियों को शिक्षित, प्रशिक्षित, अध्ययनपूर्ण कराने के लिए अभिभावक समुदाय द्वारा एकत्रित

विज्ञान=काल, क्रिया, निर्णय की अविभाज्यता; प्रयोजन सम्मत विश्लेषण

अध्ययन क्रम में विश्लेषण एक आवश्यकीय भाव, प्रयोजन के अर्थ में

प्रयोजन का स्वरूप व्यवस्था के रूप में, विश्लेषण का स्वरूप सह–अस्तित्व के रूप में वर्तमान है।

शिष्टता और सुशीलता

शिष्टता– व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करने में विश्वास और उसकी अभिव्यक्ति

सुशीलता– मानवीय आचरण पूर्वक व्यक्त होना

परिवार क्रम में शिष्टता, सुशीलता और परिवार व्यवस्था क्रम में मानव का परिभाषा प्रमाणित होता ही रहता है।

5. पति–पत्नी संबंधः– विवाह संबंध अधिकांश लोगों में वांछित

शरीर संबंध

1. गर्भाशय में शरीर रचना कार्य हेतु
2. यौवन संपन्नता सहित यौन विचार से होनेवाली आवेश मुक्ति हेतु

एक पत्नी/पति संबंध

विवाह–उत्सव : संकल्पपूर्वक निर्वाह करने के लिए मानसिक तैयारी सहित घोषणा और सत्यापन कार्यक्रम

सतर्कता सहज विधि से शिष्टतापूर्ण भाषा शैली, कार्यों को करने में दक्षता की घोषणा और स्वीकृतियाँ

दांपत्य जीवन सफल होने की कामना सहित सम्मति – हर व्यक्ति (बड़े)

दंपति के जीने की कला, विचार शैली एवं अनुभव से सदा–सदा प्रेरणा पाने के लिए कामना व्यक्त करना – छोटे बच्चे

मानव परंपरा में एकता के चार आधार – राज्य, धर्म, रोटी, बेटी

राज्य, धर्म का संयुक्त रूप= व्यवस्था

अतिथि = आमंत्रणपूर्वक सहभोज करना

परिवार व सभा विधि से आमंत्रित, संयोजित, प्रायोजित कार्यार्थ ही एक–दूसरे के अतिथि

6. व्यवस्था संबंध :–व्यवस्था के 5 आयाम में भागीदारी के संदर्भ में; इन आयामों की आवश्यकता, अनिवार्यता, पूरकता
   संस्कृति क्रम में शिक्षा–संस्कार ही प्रधान मुद्दा भाई–बहन, मित्र संबोधन
   सभ्यता क्रम में आचरण, शिक्षा–संस्कार का प्रमाणपूर्वक पोषणविधि
   सामाजिकता व स्वावलंबन एक–दूसरे के पूरक
   1. कर्मस्वतंत्रता का तृप्ति बिन्दु स्वानुशासन
   2. कल्पनाशीलता का तृप्ति बिन्दु परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी
   3. मानव लक्ष्य = परम जागृति, प्रमाण=समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व
   4. मानव बहुआयामी अभिव्यक्ति = अनुसंधान, अध्ययन, शिक्षा–संस्कार, आचरण व व्यवहार, व्यवस्था, संस्कृति–सभ्यता, संविधान

जानने मानने का प्रमाण दायित्व, पहचानने, निर्वाह करने के रूप में कर्तव्य

दायित्व से समाधान निष्पन्न एवं प्रमाणित; कर्तव्य से समृद्धि

व्यवस्था सर्वसुलभता हेतुः– मानवीयकृत शिक्षा योजना, जीवन विद्या योजना, परिवार मूलक स्वराज्य योजना

मानवत्व के आधार पर समानता का अनुभव करना ही अखण्डता का तात्पर्य

समाजशास्त्र मानव सहज मानवीयतापूर्ण विचारों का अध्ययन

स्वयं का मूल्यांकन स्वयं में विश्वास पर आधारित;

विश्वास का आधार–जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान

अध्याय 7

संचेतना = संज्ञानीयता सहित संवेदना

= जीवन जागृति का परिचायक

= जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना = स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार

संचेतना में आवर्तनशीलता = न्याय, धर्म, सत्यपूर्ण जीवन क्रियाकलाप

जागृति सहज प्रमाण :– मानवीयतापूर्ण आचरणपूर्वक परिवार मानव के रूप में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी

शिक्षा–संस्कार पूर्वक अवधारणाएँ पीढ़ी से पीढ़ी में स्थापित

समझदारी के अनुरूप विचार शैली के अनुरूप कार्य–व्यवहार

समझदारी को स्वत्व के रूप में

विचार शैली को स्वतंत्रता के रूप में

कार्य–व्यवहार का अधिकारों के रूप में वर्तमान होना पाया जाता है।

व्यवहार का फल–परिणाम का सटीक मूल्यांकन, पुनःसमझदारी की पुष्टि

जानने–मानने पहचानने निर्वाह करने की संपूर्ण वस्तुः सह–अस्तित्व, परमाणु में विकास क्रम, विकास, जीवनी क्रम, जीवन जागृति क्रम, जागृति, परंपरा, रासायनिक–भौतिक रचना–विरचना

जानने, मानने के आधार पर निश्चित प्रयोजन सहित संबंध की पहचान,

लक्षित प्रयोजनों को निर्वाह करना ही समाज सूत्र का आधार

पहचानना, निर्वाह करना एक आवश्यकता एवं विधि, इसका मूल्यांकन हर स्थिति में होना ही समाज

पूर्णता के अर्थ में गतिशीलता ही समाज है।

पूर्णता = मानवत्व सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व व्याख्या स्वरूप

=परिवार मूलक स्वराज्य सभा विधि से 5 आयाम सहित गतिशील रहना

नैसर्गिक व मानव संबंध में निहित प्रयोजनों को सार्थक बनाने का क्रियाकलाप = निर्वाह

अध्याय 8

प्रत्येक जागृत मानव संचेतनापूर्ण या संचेतनशील

जागृत मानव परंपरा में दायित्व एवं कर्तव्य बोध होना स्वाभाविक

व्यवहार और उत्पादन कार्यों में संचेतना सहज–विधि से जीवन शक्ति और बल को पूरक विधि से अर्पित करना= दायित्व

ऐसा दायित्व, कर्तव्यों के साथ ही अर्थात् व्यवहार, उत्पादन, व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी के साथ ही प्रमाणित होता है।

प्रकृति की चार अवस्थाओं की अपनी–अपनी धर्मीयता

मानव में प्रामाणिकता और प्रमाण ही सुख का स्रोत है।

शिक्षा संस्कारपूर्वक जागृति को परंपरा के रूप में स्थापित करना सहज

मानवीयतापूर्ण परंपरा = 5 आयाम की सुलभता + 4 स्तंभ का प्रमाण + अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का स्वरूप और उसकी निरंतरता

दायित्व : संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति संतुलन और उसकी निरंतरता

तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा

दायित्व बोध हेतु जानना, मानना

कर्तव्य : आवश्यकता से अधिक उत्पादन

लाभ–हानि मुक्त विनिमय कार्यों में भागीदारी

कर्तव्य बोध हेतु पहचानना, निर्वाह करना

सह–अस्तित्व विधि से विज्ञान सकारात्मक,सकारात्मकता का आधार सह–अस्तित्व एवं व्यवस्था

न्यायिक विधि से अखण्ड समाज, 5 आयामों में स्वराज्य विधि से सार्वभौम व्यवस्था प्रमाणित

अध्याय 9

पूर्णता के अर्थ में स्वत्व, स्वतंत्रता, उपकार संयुक्त रूप से वैभव संपन्न परंपरा

विधि का कार्यरूप नियम और न्याय सम्मत विधि से किया गया कार्य–व्यवहार

विधि = नियम + न्याय

नियम= नियम–त्रय; न्याय= संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति, संतुलन

संबंध= मानव–मानवः न्याय प्रधान नियम, मानव–नैसर्गिकः नियम प्रधान न्याय

मानव–मानव संबंध के 7 प्रकार – माता–पिता, भाई–बहन, गुरू–शिष्य, मित्र(सर्वाधिक विशाल), पति–पत्नी, साथी–सहयोगी, पुत्र–पुत्री

संबंधवत्

मानव–मानव संबंध का प्रयोजन – पोषण, संरक्षण, अभ्युदय, जागृति, प्रामाणिकता, जिज्ञासा, यतीत्व, सतीत्व, विकास–प्रगति, दायित्व–कर्तव्य

इन प्रयोजनों के अर्थ में हर संबंधों का कार्यकलाप साक्षित होना ही विधि है।

प्रयोजन का सूत्र :– अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था, परिवार मानव और स्वायत्त मानव के रूप में

संबंध व उसका संबोधन निश्चित प्रयोजन के अर्थ में अपेक्षित रहना

विधि – मूल्य, चरित्र, नैतिकता पूर्वक जीना; स्वतंत्रता, अधिकारपूर्वक जीना

यही संपूर्ण उत्सव का आधार

समाज वैभव : अनुभवमूलक प्रणाली से किया गया अभिव्यक्ति, विचार, व्यवहार, कार्य विन्यास(विवेक सहित न्यायपूर्वक किया गया संप्रेषणा)

पूर्णता का स्वरूप	= परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था +	स्वानुशासन
	= अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था	जागृतिपूर्णता

अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था क्रम में उसकी निरंतरता का आशा–आकांक्षा सहित होने वाली उत्साह–आकांक्षा का अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन ही उत्सव

उत्सव अखण्ड समाज के अर्थ में, समारोह सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में

संस्कारोत्सव :– जीवन जागृति – जन्म, जन्मदिन, नामकरण, शिक्षा–संस्कार (धर्म–कर्म, दीक्षा–व्यवहार, उत्पादन–संस्कार), विवाहोत्सव

नैसर्गिक उत्सव :– ऋतुकाल के अनुरूप

जन्म संस्कार – गौरव व सम्मान के समर्थन में; जीवन जागृति, शरीर स्वस्थता की कामना, पुष्टि–पोषण विधाओं की चर्चा, संवाद, गीत, गायन, नृत्य

नामकरण उत्सव – संबोधन एवं निर्देशन हेतु सार्थक नाम

जन्मदिन उत्सव संस्कार – जागृति की कामना, उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन संबंधी मूल्यांकन

शिक्षा–संस्कार व्यवस्था – जाति (मानव जाति की अखण्डता), धर्म (जागृतिपूर्णता, स्वानुशासन, प्रामाणिकता), कर्म (व्यवसाय में स्वावलंबी), व्यवहार (व्यवहार में सामाजिक), दीक्षा(जागृतिपूर्णता, स्वानुशासन, प्रामाणिकता), संस्कार – स्वायत्त मानव, परिवार मानव, अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी

मध्यस्थ सत्ता, मध्यस्थ जीवन, मध्यस्थ क्रिया(बल, शक्ति)

मध्यस्थ जीवन का स्वरूप = नियम, न्याय, धर्म, सत्यपूर्ण विधियों से जीने की कला

जागृति सहज अपेक्षाएँ अग्रिम पीढ़ी में संस्कार का आधार

विवाह संस्कारोत्सव – संबंध, निर्वाह सुखद, सुन्दर, समाधानपूर्ण; एक–दूसरे के पूरक; परिवार मानव, अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी; मूल्य, चरित्र, नैतिकतापूर्वक जीने का संकल्प

समयः– ऋतु–काल, ब्रह्माण्डीय किरण, उभय पक्ष की अनुकूलता

अखण्ड समाज का स्वरूप परिवार विधि से, सार्वभौम व्यवस्था का स्वरूप सभा विधि से

समारोहः सभा व सभा से अनुशासित 5–5 समितियों का कार्यकलाप व उसकी स्थिति–गति का मूल्यांकन हेतु

अध्याय 10

मूल्यांकन – समाज व व्यवस्था का

व्यवहार कार्य, मूल्य, चरित्र, नैतिकता का पूरक विधि से संपन्न होना

त्व सहित व्यवस्था में जीने की कला को प्रमाणित करना

नियम–त्रय विधि से चारों मानव लक्ष्य की पूर्ति

शिक्षा–संस्कार :– स्वमूल्यांकन

मानवीयतापूर्ण आचरण/स्वायत्त , परिवार मानव के रूप में जीना, समझा हुआ को समझाना, किया हुआ को कराना

न्याय–सुरक्षा:– मूल्यों का निर्वाह क्रम में अर्पण, समर्पण (बच्चा, रोगी, आपदाग्रस्त), पोषण (शरीर पक्ष को), संरक्षण (मानसिकता, विचार पक्ष को)

उपलब्धि :–उभय पक्ष की तृप्ति

उत्पादन–कार्य :– उत्पादन व समृद्धि का मूल्यांकन, वस्तु का मूल्यांकन उपयोगिता व कला के आधार पर

विनिमय–कोष :– लाभ–हानि मुक्त, श्रम–मूल्य का मूल्यांकन विधि से विनिमय

विधि, नीति एवं प्रक्रिया में सामरस्यता

स्वास्थ्य–संयम :– शरीर स्वस्थता = जीवन जागृति को शरीर के द्वारा प्रमाणित कर सकने हुतु संतुलित आहार–विहार (व्यायाम, खेल, नृत्य, गीत, संवाद, वाद्य, कलाओं का उपयोग)

श्रेष्ठता के अनन्तर श्रेष्ठता सहज योजनाएँ